धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

फरवरी - 2012

* सेवक रहकर भी अन्धेरा
* हम कैसे माता-पिता हैं?
* हां कहें या न कहें
* आप अण्डा खा रहे हैं या अण्डा आपको
* जैसा बोओगे वैसा पाओगे
* छोटी छोटी अच्छाइयों का एक बड़ा संकल्प
* जीवन प्रसंग
* शोक समाचार
* शुभ संग्राम (गतांग से आगे)

देवात्मा फरमाते हैं: -

(1) किसी प्रकार का सुख मनुष्य का लक्ष्य नहीं है चाहे यह सुख धन सम्पति विषयक अनुराग को लेकर हो, चाहे संतान अनुराग को लेकर, चाहे स्वाददार चीज़ों के खाने पीने के सम्बंध में हो, चाहे काम भाव की तृप्ति के सम्बन्ध में हो, चाहे कोई और हो, क्योंकि सुखों के अनुरागी बनने से प्रत्येक मनुष्य का आत्मा पतित होता है कि जिससे आत्मा में अन्धकार की उत्पत्ति और ज़्यादती होती है और उसका यह अन्धकार उसे अपने आत्मा और अपने आत्मिक जीवन विषयक नाना सत्यों को देखने के अयोग्य बनाता है। इस पतन से उसमें उल्टी इृष्टि पैदा होती है और वह अपनी उल्टी दृष्टि के कारण नाना सम्बन्धों में सत्य को असत्य और असत्य को सत्य, शुभ को अशुभ और अशुभ को शुभ के रूप में देखता है। उसके अन्दर कई प्रकार की नीच घृणाएं पैदा होती हैं जो आत्मिक जीवन के लिए घातक विष का काम करती हैं और इन सबसे उसके अन्दर विविध प्रकार की मिथ्याओं और दुराचारों की तरफ जाने के धक्के लगते हैं और वह विविध प्रकार की मिथ्या और विविध प्रकार की नीच गतियों को ग्रहण करता है, इन्हीं कारणों से इंसानी दुनिया में इस सीमा तक कई प्रकार का झूठ और दुराचार आदि फैला हुआ है।

(2) किसी मनुष्य के दिल में यदि विशुद्ध परोपकार का भाव पैदा हो और वह काफी गहराई में मौजूद हो और वह इस भाव से परिचालित होकर बिना किसी से कुछ रूपया पैसा, प्रशंसा, सम्मान और पद आदि का लालसी होने के केवल भलाई करने के विचार से अपना सब कुछ अर्पण कर सके और किसी से अपनी ओर से अपने लिए कुछ न चाहे और अपने परिवार के लोगों के लिए किसी से किसी चीज़ के लिए निवेदन न करे और नेचर के विकासकारी नियम पर अटल विश्वास रखकर और इस नियम के अनुसार जिस देवात्मा का आर्विभाव हुआ है, उसके देवरूप के साथ सच्चा योग रखकर अपना काम किए जाए, तब नेचर की गुप्तविधि के द्वारा न केवल उसकी और उसके परिवार की पालना आदि के अवश्यक सामान पैदा हो जाएंगे और जिस शुभ काम मे वह लगा हुआ होगा, उसकी उन्नति के लिए भी समय के साथ साथ कई प्रकार के और आवश्यक सामान और अनुकूल हालात भी पैदा होते जाएंगे कि जिसकी सच्ची मिसालें देवसमाज के इतिहास में मौजूद हैं।

इन बातों को साफ तौर से समझाने के लिए भगवान ने अपने वक्तव्य के दौरान कई प्रकार के उदाहरण पेश किए और उसके बाद उन्होंने यह घोषणा की कि वह चाहते हैं कि आत्मिक परिवर्तन का काम दुकानदारी की चीज़ न समझा जाए बल्कि यह काम विशुद्ध परोपकार भाव से हो कि जिसमें और कोई नीच स्वार्थ न हो, इसलिए देवसमाज के प्रचार विभाग में जो लोग काम करेंगे उन्हें भविष्य में समाज की ओर से उनकी निजी या उनके परिवार की आवश्यकताओं के लिए एक पैसा तक नहीं दिया जाएगा और उन्हें अपने खाने-पीने, कपड़े, सफर और डाक खर्च पर हर प्रकार के खर्च के लिए नेचर की उस गुप्त परन्तु सच्ची विधि पर विश्वास करके काम करना होगा कि जिसका ऊपर बयान किया गया है। इसके अतिरिक्त उन्हें और कई प्रकार के आवश्यक त्याग भी ग्रहण करने पड़ेंगे।

बाकी का पृष्ट 17 पर

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 2

फरवरी – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सेवक रहकर भी अन्धेरा

अन्धेरे का अर्थ है, दुख, हानि और विनाश। इसका अर्थ यह है कि यदि हम किसी पक्ष में भी अन्धकार ग्रस्त हैं, तो वह अन्धेरा हमारे लिए दुख, विनाश वा हानि का प्रतीक सिद्ध होता है, जैसे रात का अन्धेरा, परन्तु अन्धेरे कई प्रकार के हैं, मान्सिक अन्धेरा, सात्विक अन्धेरा और सबसे भयानक है आत्मिक अन्धेरा। यहां हमारा मतलब आत्मिक अन्धेरे से है।

सेवक बनकर बहुत बड़ा लाभ होता है कि मनुष्य का मिथ्या देवी देवताओं से पीछा छूट जाता है। बहुत बड़े भुलेखों का शिकार होकर मनुष्य जो झूठे और मिथ्या कितने ही कहलाने वाले उपास्यों का विश्वासी बनकर भिन्न भिन्न प्रकार के पूजा पाठ, दुआ नमाज़ आदि के वृथा अन्धेरे ढोता है, मनुष्य सेवक बनकर उनसे बच जाता है। दूसरा बड़ा लाभ यह होता है कि मनुष्य मोटे मोटे पापों की भयानक हानि से बच जाता है। इससे भी मनुष्य का काफी बचाव हो जाता है, मनुष्य बहुत से दुखों और हानियों से सुरक्षित हो जाता है।

परन्तु इतना कुछ होकर भी अकसर बहुत सारे सेवक सेविका वा बहुत से प्रचारक वा कर्मचारी भी अन्धेरे में ही रहते हैं और बहुत बड़ी हानि का शिकार होते रहते हैं। यहां हम उस अन्धेरे का उल्लेख़ करते हैं जो हमें सेवक सेविका बनकर भी, उच्च से उच्च श्रेणियां में उन्नत होकर भी अकसर हमारे निज के सम्बन्ध में रहता है।

हम कुछ न कुछ इस भुलेख़े के शिकार हुए रहते हैं कि हम तो अच्छे इन्सान हैं, धार्मिक बंदे हैं, पापी इन्सान नहीं, मिथ्या विश्वासी नहीं। परन्तु सेवक बनकर भी अकसर हम अपने शरीर के लिए ही जीते हैं। शरीर को ही मुख्य समझते हैं। हम शरीर के लिए खाते पीते, पहनते, सोते जागते और नहाते धोते हैं। शारीरिक सुखों की पूर्ति में ही जीवन की गाड़ी चलती है। शरीर के बिना अपने आत्मा का कोई ख़्याल नहीं आता, इसलिए आत्मा के लिए कुछ भी नहीं करते। उसके भले बुरे का ख़्याल ही भूला रहता है। हम सारी उमर आत्मा के विषय में कोई जाग्रति नहीं रखते। आत्मा के भले बुरे का ख़्याल ही विसारा हुआ है। गुरू महाराज ने फरमाया है "हे मनुष्य तू केवल शरीर नहीं, आत्मा भी है। केवल शारीरिक सुखों के लिए ही उमर बर्बाद न कर" अपरोक्त सत्य के प्रति हम अकसर आंखे बन्द किए रखते हैं, केवल शरीर को लेकर ही हरकत में रहते हैं। अपने आत्मा के भले और आत्मा को लेकर कुछ भी जीना शुरू नहीं करते। जैसे पशु को

अपने आत्मा के प्रति कोई सोझी नहीं होती, पशु की तरह हम खाते पीते, परिवार बनाते, धन धरती और पदार्थ जोड़ते, जिस्मानी वा नफ़सानी सुखों को भोगते और यही जीवन लक्ष्य रखकर जीवन व्यतीत करते हैं। यह घोर अन्धेरे का जीवन है, यह जीवन मनुष्य होकर पशुपन का ही जीवन है।

हमें सेवक सेविका बनकर और सारी उमर रहकर भी अपनी प्रेरित करने वाली अपनी परिचालक आन्तरिक शक्तियों का ज्ञान नहीं रहता। यह तो हम अक्ल से सीख जाते हैं कि हमें हमारे अन्दर के भाव ही चलाते हैं, परन्तु यह जानकर भी हमें पता नहीं होता कि हमें कौन से भाव चलाते हैं। हम अपनी मनोविज्ञानिक बनावट के सम्बन्ध में बहुत कुछ अन्धेरे में ही रहते हैं। हमारा मुख्य परिचालक भाव कौन सा है, कौन सा अनुराग है या कौन सी शक्ति है, भीतर की जो शक्ति हमें जोर मारती है, हम उस ओर ही चल पड़ते हैं। हम dumb driven वजूद ही रहते हैं। न किसी भयानक और महां हानिकारक शक्ति का बोध, न होश और न उसका कोई भय या दुख और न उससे बचने की कोई सोच वा फ़िकर हमारे भीतर होता है। हमारे भीतर, प्राय: प्रत्येक मनुष्य के भीतर नीच शक्तियां ही पलती रहती हैं और हमारी जिन्दगी का नाश करती रहती हैं। हम बेफिकर और खुश प्रसन्न, सुखों की खुमारी अन्दर सारी ज़िन्दगी गुज़ार देते हैं और भयानक आत्मिक हानि के शिकार होते रहते हैं, जिसका हमें कोई पता तक नहीं चलता।

आगे हमें यह पता नहीं होता कि जो कुछ हम करते हैं वह कौन से भावों से करते हैं। जो हम खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं, पहनते और अपने आपको सजाते हैं, दिन में कितनी बार पोशाकें बदलते हैं, जो कोई भला काम करते हैं, सेवा आदि करते हैं, उसके पीछे हमारा कौन कौन सा भाव काम करता है। वह अच्छा भाव है या हानिकारक भाव है। हम अन्धा ध ुन्ध चलते जाते हैं। सारी उमर अन्धेरे में तीर चलाते रहते हैं। अकसर खुशी खुशी महमानों को खाने खिलाते रहते हैं। दुखों, सुखों में शरीक होते रहते हैं। शगुन, भेंटे देते रहते हैं, कई प्रकार के धर्म साधन करते रहते हैं। कई जन अपने घरों में पूजा पाठ करवा कर, पंडितों, साधुओं को खिलाकर तृप्त होते रहते हैं, परन्तु यह हाथी के स्नान की तरह नीच गतियां ही होती है। हमारा धर्म साधन हां भजन गाना, सभा करवाना, लेख लिखना, सब अकसर नीच गतियां ही होती हैं।

एक बार एक खानदानी बज़ुरग, भद्र पुरुष वकील और जो कौंसल के मैंबर भी थे, वह मोगे विकासालय के पौधों को पानी दे रहे थे और सेवा का काम कर रहे थे, उनसे एक तुच्छ से विकासार्थी ने पूछ लिया कि श्रीमान जी आप पौधों को पानी दे रहे हो यह उच्च गति है या नीच गति। तो उन बजुरग, कर्मचारी, कौंसलर साहिब ने कहा कि निश्चय यह उच्च गति है, यह पौधे खुराक ले रहे हैं, हरे भरे हो रहे हैं, यह नीच गति कैसे हो सकती है? फिर यह कौंसलर साहिब और विकासार्थी माननिय श्रीमान ध र्मबल जी के पास गए, तो उन्होंने समझाया कि किस प्रकार सेवा के काम भी कई बार उच्च गति नहीं भी होते।

हमें अपनी नीच वा उच्च गति का बोध, परख ठीक प्रकार से नहीं होती। इस सब में भी हम अन्धकार में रहते हैं। अपनत्व के प्यार के कारण हम अपनी गतियों को उच्च वा ठीक ही समझते रहते हैं। बिना श्रद्धा के प्रणाम बन्दर सलाम ही रह जाता है। बिना कृतज्ञता के भाव के होने से उपकारी के

उपकारों का ब्यान तोते रट के बिना कुछ नहीं होता। उच्च भाव हमारे भीतर होते नहीं, न उनको पैदा करने का कोई संग्राम और साधन हम करते हैं, इसलिए हम रस्म पूरा करने को उच्च गति की सज्ञा दे देते हैं। अधि कतर जनों में विरली ही कोई उच्च गति होती है, सारा मनुष्य जगत ही नीच गतियां करता रहता है, और उन्हें ही उच्च देखता रहता है। जितनी देर हमारे भीतर कोई ठोस उच्च भाव पैदा न हो, तब तक उच्च गति होनी सम्भव ही नहीं।

"चहुंदिग जग में, नीच गति की रौ है जारी", आन्तरिक अन्धेरे में अपनी नीच गतियां दिखाई नहीं देती। मनुष्य अपने आपको सदा ठीक ही देखता है, सुन्दर और श्रेष्ट अनुभव करता है। हर मनुष्य नीच सुख अनुरागी है, इसलिए नीच घृणाकारी है। ऐसे मनुष्य के लिए बेऐब होना न मुमकिन है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं, जिसमें अपने वा पर के सम्बन्ध में व्यवहार में त्रुटियां न हों परन्तु अपने प्रति अन्धेरे के कारण, पापी से पापी, कसाई डाकू, वेश्वा, कातिल तक को भी अपना रुप सुन्दर ही दिखाई देता है।

अपने भावों को जानने की अवश्यकता है। हमारे भाव एक जैसे नहीं रहते, वह भी विश्व के अटल परिवर्तन के अधीन हैं। प्रतिदिन भाव घटते या बढ़ते रहते हैं। सेवक होकर भी अपने भावों के घटने बढ़ने का ज्ञान नहीं होता, इसलिए धीरे धीरे हम आत्म नाश की ओर बढ़ते जाते हैं।

हमारे भीतर सबसे प्रबल भाव कौन सा है, इसका भी हमें ज्ञान नहीं। जो मुख्य परिचालक भाव है, वही हमारा जीवन लक्ष्य निरधारित करता है। विकासार्थी, कर्मचारी बनकर भी हम परोपकारी नहीं बनते, बल्कि स्वार्थी बनते हैं। हम अपना काम बदलने से उच्च नहीं बनते, उच्च भाव पैदा करने ज़रूरी हैं। कुछ पढ़ने, लिखने से ज्ञानी नहीं बनते, अपनी हस्ती के प्रकृत ज्ञान के बिना कोई ज्ञानी नहीं बनता। हम अपना जीवन लक्ष्य क्या बनाया है, यह हमारा विकास और विनाश फैसला करता है।

(बलदेव सिंह)

कल्याण सत्संग

पाठक गण! नोट फरमाएं कि कल्याण (भटिंडा) में इस वर्ष भी हमेशा की तरह विशेष सत्संग वा माता-पिता दिवस वा देव समाज उत्सव 17 फरवरी से 20 फरवरी 2012 तक रखा गया है। इस शुभ अवसर पर अधिकारी जन अपने और सम्बन्धियों वा साथियों समेत अधिक से अधिक पहुंच कर लाभ उठाएं।

बलदेव सिंह

हम कैसे माता - पिता है?

पूजनीय भगवान् की सम्बन्ध - तत्त्व की शिक्षा मनुष्य - मात्र पर और उपकारों के भिन्न बहुत बड़ा उपकार है। बेशक, हम उनके सेवक होकर भी इन सब सम्बन्धों में सब आदेश पालन करने में असर्मथ्य हैं, परन्तु अपनी - अपनी योग्यता के अनुसार हमारे सम्बन्धों में जो बेहतरी आई है, वह हमें इस विश्व में स्वर्ग का अनुभव देती है।

पूजनीय भगवान् के पावन जन्म दिवस ने जो कुमहलाए हुए हृदयों को सरस किया, उसी सरसता को लिए हुए हमने नए वर्ष में प्रवेश किया है। नए वर्ष का आरम्भ उस सम्बन्ध से हुआ , जिससे हम सब का आगाज हुआ है। यह सम्बन्ध है माता - पिता का सम्बन्ध। बहुत अमीर होकर, बहुत योग्यताएं रखकर और विद्वान् होकर भी एक एक जन इस सम्बन्ध में घोर - अबोधता का प्रदर्शन करके माता - पिता के लिए किस कदर दुखदाई बना हुआ है, ऐसी उदाहरणें प्राय: घर - घर में मिलती हैं। परन्तु पूजनीय भगवान् की अपार - कृपा से इस सम्बन्ध में देव समाज के परिवारों में सन्तोष - जनक सुधार हुआ है और अधिकांश माता - पिता सुख का सांस ले रहे हैं।

पूजनीय भगवान् सर्व - हितकर्ता हैं। उन्होंने माता - पिता दिवस नहीं, बल्कि माता - पिता - सन्तान दिवस के रूप में मनाने के आदेश दिए हैं। माता - पिता के उपकारों और उनकी सेवाओं की ओर अक्सर हमारा ध्यान जाता है, परन्तु सन्तान के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं, उन कर्त्तव्यों को हम कहां तक पूरा कर पा रहे हैं। इसकी तरफ बहुत सोच - विचार नहीं जाती है। पूजनीय भगवान् जो स्वयं न केवल आदर्श - पुत्र थे, वह आदर्श - पिता भी थे। उन्होंने सन्तान के सम्बन्ध में भी हमें आदेश दिए हैं, जिनका अध्ययन और पालन भी उतना ही आवश्यक है, जितना माता - पिता के सम्बन्ध में।

सन्तान को केवल जन्म दे देना, उनके लिए सुख - सुविधाएं जुटा देना और उनको ऊंची शिक्षा दे देना ही माता - पिता का कर्त्तव्य नहीं, बल्कि बच्चों की पालना करने में उनकी कोमल - भावनाओं को ठेस न पहुंचाना, उनको नैतिक - मूल्य मनोविज्ञानिक - ढंग से सिखाना, अपने मूल्यों को उन पर थोपना नहीं, बल्कि उनकी रुचियों को अच्छी तरह जानना, यह बहुत बड़ा विज्ञान है। माता - पिता तो सभी बन जाते हैं, परन्तु बच्चों के मनोविज्ञान का अध्ययन बहुत कम माता - पिता करते हैं।

माता मन्टेसरी ने इस क्षेत्र में अनोखा आन्दोलन चलाया है। इनको इन्क़लावी मुक्ति - दाता कहा जाता है। उनके अनुभव में तो प्रत्येक माता - पिता भिन्न - भिन्न प्रकार से बच्चों पर अत्ययाचार करते हें। वैसे हम सब अपना यह दावा करते हैं, कि हम बच्चों को अपनी जान से भी बढ़ कर प्यार करते है। अपना पेट काट कर बच्चों की माता - पिता पालना करते हैं, फिर हम अपने बच्चों पर कैसे अत्याचार कर सकते हैं। हमारा मोह - अनुराग हमारे से कुर्बानी तो ज़रूर करवाता है, परन्तु बच्चों की कोमल - भावनाओं को हम समझ नहीं पाते।

माता मन्टेसरी ने तो यहां तक लिखा है कि मनुष्य की जिस प्रकृति ने गुलामों व स्त्रियों पर अत्याचार किए, वही हिंसक - प्रकृति का प्रदर्शन मनुष्य बच्चों पर करता है। जैसे प्रत्येक निरंकुश राजा अपने - आपको प्रजा का हितकारी बताता है, वैसे ही अनुभव - हीन प्रत्येक माता - पिता बच्चों पर अत्याचार करते हुए भी अपने - आपको उनका हितकर्ता समझते

हैं। उनका अहं, अपने दोष उन्हें देखने नहीं देता। निम्न-लिखित बातों पर विचार करके हम देख सकते हैं। कि हम कैसे माता-पिता हैं:-

1) माता-पिता, अपने व्यवसाय, अपने घरेलु कामों में इतने व्यस्त होते हैं। उन कामों को उनके सामने इतना महत्त्व होता है कि वह नन्हा बच्चा जो काम करना चाहता है और उससे उसकी जो सन्तुष्टि होती है, उसको अनुभव नहीं कर सकते। वह अपने हाथ से खाना चाहता है, पानी व दूध पीना चाहता है। वह हर वस्तु को छूकर देखना चाहता है। इस तरह के काम ही बच्चे के काम है, यह सब उसके विकास की गतियां हैं, माता-पिता महंगे खिलौने लाकर अपने अंह की तृप्ति तो कर लेते हैं, परन्तु जब बच्चा उसको खेलना चाहता है और तोड़ता है, तो उस नन्हें से फ़रिश्ते की शामत आ जाती है। बच्चे के लिए टूटी-फूटी चीजें भी खिलौने हैं, क्योंकि उनके वह अपनी इच्छा से खेल तो सकता है। माता-पिता समय के अभाव के कारण, या किसी वस्तु के टूटने के डर से या बच्चों के कपड़े ग़न्दे होने के डर से, बच्चे की नन्हीं-नन्हीं इच्छाओं को बड़ी बेरहमी से दबा देते हैं। जब बच्चा किसी काम को स्वयं करना चाहता है, कोई बार मां थप्पड़ लगाकर वह काम खुद कर देती हैं, वह बेचारा हार मानकर चुप हो जाता है। बच्चा बहुत संवेदन-शील होता है। माता मन्टेसरी ने तो बच्चों को "दुख-भोगी मसीहा" कहा है।

2) बच्चा दिल का साफ़ होता है। जब हम किसी बात का डर उसके दिमाग में डाल देते हैं, तो वह डर के मारे झुठ बोलना आरम्भ कर देता है। बच्चों को बहलाने के लिए माता-पिता झूठ मार कर, उसको ग़लत सुझाव देकर उसके व्यक्तित्व के सही विकास में बाधक बनते हैं। बच्चे का एक अलग व्यक्तित्व है। परन्तु माता-पिता अक्सर अपने आदर्शो को उस पर थोपकर उसको कुचलने का काम करते हैं। यदि बच्चा उन आदर्शों पर न चल सके तो कई बार उसको अपने घर से निकालने का डर देते हैं, उसको बुरा भला कहते हैं। इससे बढ़कर और क्या ज़्यादती हो सकती है।

3) माता-पिता बच्चों को शारीरिक-दण्ड देते हैं। यह और बड़ा अत्याचार है। पिता अपने काम से थक कर आता है पर अपने अफसर से दुखी है, माता अपनी व्यस्तता और कमज़ोर सेहत से बेबस है, तो सारा गुस्सा नन्हें बच्चे पर निकलता है। बच्चे की असहाय अवस्था माता-पिता के इस गुस्से पर रोक तो नहीं लगा सकती, परन्तु उसको कुंठित कर देती हैं। अक्सर बच्चे को यह पता ही नहीं होता कि उसकी ग़लती क्या है। कई बार उसी क्रिया पर माता-पिता उस को हंस कर या शाबाश देकर प्रोत्साहित करते हैं। परन्तु कभी उसी बात पर बच्चे को डांटते हैं, क्योंकि बच्चे को दण्ड-दाता और न्याय-कर्ता स्वयं माता-पिता ही हैं। कई बार बच्चों को अन्धेरे कमरे में बन्द कर दिया जाता है। कई बार उनका खाना बन्द कर दिया जाता है, खेलना बन्द कर दिया जाता है। माता-पिता अपने अंह के अधीन अपने बनाए हुए अनुशासन में बच्चे को बांधना चाहते हैं और उसे उचित ठहराते हैं। ऐसा कठोर अनुशासन बच्चे को अनुशासन-हीन बना देता है। यह उसके विकास में बेहद बाधक है। माता-पिता का ऐसा बर्ताव बच्चे को भीरु, झूठा और उदण्ड बना देता है।

4) बच्चा केवल शरीर नहीं, उसका दिमाग़ और उसकी परिचालक-शक्तियां भी हैं। माता-पिता अपना कर्त्तव्य बच्चे को अच्छा खाना-पीना और अच्छे कपड़े देने तक ही सीमित रखते हैं। कुछ माता-पिता उच्च-विद्या भी देना चाहते हैं, परन्तु उसमें बच्चे को पूर्ण सहयोग नहीं देते। अच्छा परिणाम न आने पर डांट-डपट भी करते हैं, परन्तु बच्चे की

मानसिक - शक्तियों के विकास के लिए घर का वातावरण नहीं दे सकते।

इससे भी बढ़कर उसके भावात्मिक विकास के लिए सहयोगी होना तो बहुत दूर की बात है। बच्चा बहुत जिज्ञासु होता है। उसको सन्तुष्ट करने के लिए माता - पिता के पास न समय है और न धैर्य। बच्चे जितने अधिक संवेदन - शील और भावात्मिक होते हैं, उतना ही अधिक वह माता - पिता की निकटता और मित्रता चाहते हैं। साधारण बुद्धि वाले बच्चों की पालना इतनी कठिन नहीं परन्तु दिल व दिमाग़ की असाध ारण योग्यता रखने वाले बच्चों की पालना बहुत कठिन है। माता - पिता उनके अनुकुल वातावरण नहीं दे पाते, तो उनमें असमाजिक'तत्वों के विकसित होने की अधिक सम्भावना है।

5) बच्चे में कोई बुराई पनपने से, उसके साथ सहानभूति होने के स्थान पर अक्सर माता - पिता बच्चे को डांट - फ़िटकार डालने लगते हैं। दूसरे बच्चों से उसका मुकाबला करके उसके अंह पर बार - बार चोट करते हैं। बच्चे के रोगी होने पर उन्हें यह डर नहीं होता कि लोग क्या कहेंगे, परन्तु उसकी बुराई जो उसका भावात्मिक - रोग है, उसको लेकर वह उसे स्वयं भी घृणा करते हैं और यह सोचकर कि लोग क्या कहेंगे, बच्चे से दुर्व्यवहार करते हैं। बच्चे का मनोविज्ञान समझने के लिए उनके पास समय नहीं होता।

6) माता - पिता का स्वयं का व्यवहार बच्चों के लिये आदर्श होता है। यदि माता - पिता झूठ बोलते हैं, बेईमानी करते हैं किसी को धोखा देकर उसकी शेखी बघारते हैं उन्होंने अपने माता - पिता को घर के एक कोने में फेंका हुआ है, तो बच्चे भी उस रूप में ढलते जाते हैं। ऐसे माता - पिता अपने बच्चों से भी सम्मान, स्नेह व सेवा की आशा नहीं कर सकते।

7) बच्चे कई बार आसाधरण गुण रखते हैं। कईयों की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, कईयों के भीतर संग्राम करने की अधिक शक्ति होती है और भी कई गुण होते हैं जिनकी माता - पिता अक्सर प्रशंसा न करके, बच्चों की कमियों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देते हैं। उनकी किसी विशेष - उपलब्धि पर उन्हें प्रोत्साहित न करके अक्सर यह कहते हैं कि "इस बात को लेकर अकड़ते हो, फलां अपनी कमज़ोरी देखो" यह बहुत ग़लत दृष्टिकोण है। बच्चे की किसी भी उपलब्धि की उस समय भरपूर प्रशंसा करके, किसी और समय में उसकी ग़लती को बता सकते हैं। इस तरह बच्चा सुनने के योग्य बन जाता है। छोटी - छोटी बातों की आलोचना उसे माता - पिता से दूर करती जाती है।

जैसे बच्चों के लिए आवश्यक है कि वह माता - पिता के उपकारों और सेवाओं को याद रखें। आखिर वह उनके रचना - कर्ता हैं, उन्होंने अपनी योग्यता के अनुसार बच्चों की रक्षा, पालना और शिक्षा दी है। परन्तु इसके साथ - साथ माता - पिता को भी चाहिए कि वह बाल - मनोविज्ञान का अध्ययन करें, बच्चे की योग्यताओं के अनुकुल वातावरण प्रदान करें। बच्चे की दूसरे से तुलना न करके उसके स्वयं के व्यक्तित्व को विकसित करें।

पूजनीय भगवान् ने इस पहलू में जो आदर्श रूप दिखाया है, उसका अध्ययन भी अति आवश्यक है। पूजनीय भगवान् अपने एक - एक बच्चे के भले के लिये जिस क़दर तड़पे हैं, शुभ - कामनाएं की है। उनको हर प्रकार से विकसित करने में सहयोग दिया है, उस का अनुमान हम माता - पिता क्या कर सकते हैं। वह गुरू होकर प्रति बच्चों के लिये लिखित - आदेश छोड़ गए हैं। उनका पाठ करके हम उस आइने में देख सकते हैं कि हम कैसे माता - पिता हैं।

सुरजीत बराड़

हां कहें या न कहें

यदि डरकर या झिझक के कारण हम हर स्थान पर 'हां' कहते रहेंगे, तो हर कोई हमें दबाता ही चला जाएगा। नजायज़ फरमायश मानने या हर एक को हां कहने की आदत हमें निपुण या हर मन प्यारा नहीं, बल्कि डरपोक और कमज़ोर बनाती है। हम दूसरों को इसलिए हां करते रहते हैं कि इसे अपनत्व वा शान्ति बढ़ेगी और सम्बन्ध मधुर होंगे, परन्तु इस ढंग से सम्बन्ध मधुर नहीं बनते।

किसी को नाराज न करने वाले से विकास नहीं होता और उनके अस्तित्व का कोई स्पष्ट रूप भी नही पता लगता।

यदि हममें खुलकर अपनी राय प्रगट करने की दलेरी नहीं, ठीक को हां और ग़ल्त को न कहने का सलीका, या स्वाभिमान की भावना नहीं, फिर पद कोई हो, हमारी अलग पहचान नहीं बनती।

प्रत्येक बृताव के नियम होते हैं, दब्बू बनने के भी नियम हैं और निडर होने के भी नियम हैं। निडर व्यक्ति की अपने आपके बारे राय साफ होती है, उसके कर्मो और सोच में स्वतन्त्रता झलकती है। दब्बू व्यक्ति न कहने से डरता है और हर वक्त दो तरफी सोच में डूबा रहता है।

प्रभावशाली व्यक्ति किसी ठीक काम को करने का साधन बनते हैं। परन्तु डरपोक व्यक्ति सब कुछ होने की इन्तज़ार में रहते हैं। धक्केबाज, चतुर और चालाक बनने की अवश्यकता नहीं परन्तु कुबड़े होकर चलने और हर एक के आगे झुकने से न करने की आवश्यकता है। लोगों की बड़ी गिणती इसलिए कहीं नहीं पहुंचती क्योंकि समय पर वह हां या न करने की दलेरी नहीं रखते । ऐसे लोग डर कर झुककर जीने के आदी हो जाते हैं। वह सोचते हैं कि यदि न कही तो दूसरे रूठ जांएगे।

न पसंद होने का भय, रद्द करने का डर, पीछे रह जाने की चिन्ता, या बेइज्ज़ती होने का सहम हमें अपने हक लेने नहीं देता। इसलिए हमारे सारे फैसले दूसरे ही करते रहते हैं। न कहने के स्थान पर हां कहने से हम अपने मनोबल को नष्ट करते हैं।

हां कहनी आसान है और न कहने से हम झिझकते हैं। हां कहने के मुकाबले में न कहने में अधिक ताकत, त्याग, दृड़ता और स्वाभिमान की ज़रूरत पड़ती है।

आरम्भ में न कहने वालों को अच्छा नही समझा जाएगा, परन्तु धीरे धीरे न कहने वाले की बात अधिक ध्यान के साथ सुनी जाने लगती है।

अच्छी आदतों का दबदबा होता है, जिस प्रकार सुन्दरता का रोब होता है वैसे ही विद्वता का रोब होता है। रोब अच्छी आदतों और अपने कार्य में निपुणता से उपजता है। रोब वह गुण होता है, जिसके लिए अपने आप दूसरों के मनों में सत्कार पैदा हो। ऐसे रोब वाले लोगों की हां या न में ताकत होती है, ऐस व्यक्ति लम्बे नहीं ऊंचे होते हैं। वह गोरे चाहे न हों परन्तु सुन्दर लगते हैं। इनकी अलग पहचान होती है, जो दूसरों को आकर्षित करते हैं।

एक कालिज में फिलासफी के प्रोफैसर होत थे, जिनके ज्ञान वा शख्सीयत का सारे कालिज पर रोब था। विद्यार्थी उनके बारे में ही बातें करते,

छुप छुपकर उन्हें देखते रहते। उनसे उन्होंने सीखा कि अमीरी उसके पद या जायदाद से नहीं, व्यवहार से परख़ी जाती है।

एक बार कालिज के विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। कालिज के प्रबन्धकों ने बातचीत सुनने के बाद मांगे मानने से इन्कार कर दिया। तो विद्यार्थियों ने कहा कि यदि फलां प्रोफैसर यह कहदे कि हमारी मांगे अनुचित हैं, तो हम हड़ताल वापिस ले लेंगे, क्योंकि उन्हें पता था कि वह ग़ल्त बात पर प्रबन्धकों की हां में हां नहीं मिलाएगा। प्रबन्धकों के पूछने पर प्रोफैसर साहिब ने कहा कि विद्यार्थियों की तीन मांगों में से दो मांगे वाजिब हैं। उनके इस तर्क को प्रबन्धकों ने और विद्यार्थियों ने मान लिया।

अपनी दृड़ता के कारण हर स्थान पर आप अपनी मांग मनवा सकते हैं। इससे स्वाभिमान भी उपजता है। ऊंची सोच के बिना स्वाभिमान नहीं उपजता। महापुरुष अपनी ऊंची सोच के कारण ही महापुरुष कहे जाते हैं।

सारे महापुरुष अपने ढंग के साथ जीए हैं और अपने आदर्षों और असूलों को तोड़ने से उन्होंने न कह दी।

इतिहास में नाम उनका ही होता है, जो शक्तिशाली के आगे भी झुकने से न कहने की दलेरी रखते हैं। बड़ी कुर्बानी की तरह दलेरी भरी न अपने आपको दांव पर लगाने के चाव से उपजती है।

यदि हम आज आज़ाद हैं, तो इसके पीछे हज़ारों लोगों की गुलामी को न कहने वाली कुर्बानियां खड़ी हैं।

जिन्दा मछली पानी के बहाव के विरूद्ध चलती है। केवल मरी हुई मछली बहाव के साथ बहती है।

न कहनी कितनी मुश्किल है, यह जानने के लिए नींद को न कहकर देखो। बुरे कामों को न कहना और भी मुश्किल है। चरित्र की शक्ति के बिना न कहनी संभव ही नहीं होती।

जब तक हम आप निर्णय नहीं करते कि मैं कौन हूं, मेरा उद्धेश्य क्या है, तब तक हम हां या न का फैसला भी नहीं कर सकते। ठीक कार्य को करना नहीं होता, कठिन होता है यह जानना कि ठीक कारज क्या है?

जो अपने अधिकारों के प्रति सुचेत नहीं होते, वह अपने कर्तव्य भी नहीं पालते, वह सोच के पक्ष में भी स्वतन्त्र नहीं होते। शिष्टाचारिता से हाज़िर जवाबी और मौके अनुसार, ज़रुरत अनुसार बात करने की योग्यता, हमारी सही सोच और हमारे स्वतन्त्र व्यवहार की पक्की निशानी होती है। हां या न स्पष्ट होनी चाहिए।

यदि कोई उधार ले चुका है और वापिस किए बिना और लेने आया है उसे मोटी न कहने की अवश्यकता है।

यदि हमारी न मजबूत होगी, तो हमारी हां की ताकत बढ़ जाएगी।

ठीक समय पर हां या न कहने से बड़ी बड़ी क्रान्तियां जन्म लेती है। बग़ावतें बड़े बड़े तख़्ते पलट देती हैं। हमें यह जानने की अवश्यकता है कि हम भीरु बनकर जीना चाहते हैं या बहादुर बनकर ठीक फैसले के साथ खड़े होकर अच्छे उद्धेश्य को पूरा करते हैं।

आप अण्डा खा रहे हैं या अण्डा आपको

मनुष्य में धन कमाने की लालसा या वासना तीव्र हुई है। वह पशु पक्षियों के शरीर के साथ खिलवाड़ करने लगा है। हम जैसे जैसे प्रकृति की स्वभाविकता को दूषित (भंग) करते हैं, प्रकृति भी हमारे सहज स्वभाविक जीवन की सहजता और स्वभाविकता को दूषित, विनष्ट और ध्वस्त करती है। किस्म किस्म की बीमारियां फैलती हैं और तरह-तरह के सामाजिक असंतुलन जन्म लेते हैं। कत्ल, क्रूरता, हत्या, आतंकवाद, हिंसा को बढ़ावा देने में अण्डा व मुर्गी उत्पादन गृह का भी उतना ही हाथ है, जितना बूचड़खानों का। धिक्कार है हम फिर भी हिंसा से बाज नहीं आ रहे हैं। धड़ाधड़ नई पोल्ट्रियां और बूचड़खाने खुल रहे हैं।

अहिंसा में आस्था रखने वालों के लिए अण्डा पूरी तरह अभक्ष्य और वर्ज्य है। मुर्गीपालन से लेकर अण्डा प्रजनन तक हिंसा ही हिंसा होती है। मुर्गी को 75 इंची 76 इंची बहुत थोड़ी जगह में नाना संत्रासों और तनावों के बीच कैद रखा जाता है। उनका तनाव अण्डा खाने वालों के खून में पहुंचकर उनके व्यक्तित्व को असंतुलित करता है। अहिंसक भूमि पर अण्डा और मांसाहार जैसी हिंसक वृत्तियों के बढ़ने से न केवल देश के आदर्शों, मूल्यों और महान परहितकारी परम्पराओं का बल्कि देश के महत्वपूर्ण व्यक्तियों तक का सरेआम वध हो रहा है।

स्वाद और संचय, विज्ञान और तकनीक शास्त्र ने हमारे खानपान की समस्या को अधिक उलझा दिया है एवं सरकार और उसके प्रचार माध्यम भी जनता के साथ छल-कपट पर आमादा हैं। टी०वी० रेडियो और अखबारों में खाद्य वस्तुओं के कपटपूर्ण भड़कीले विज्ञापन भारतीय जनता का सुनियोजित शोषण ही करेंगे। अण्डा धूम्रमान की तरह स्वास्थ्य के लिए घातक है। ये जहर ही जहर है। आप अण्डा नहीं खा रहे हैं किन्तु अण्डा आपको खा रहा है। न तो अण्डा शाकाहार है, न ही यहां की भूमि के निवासियों के लिए उपयुक्त आहार। जितनी देर में आप यह पढ़ रहे हैं उतनी देर में 5000 चूजों की जान ली जा चुकी है।

मुर्गो के शुक्राणु मुर्गी के शरीर में एक लम्बी अवधि तक पड़े रहते हैं। (छः माह तक भी) इसलिए मुर्गे की अनुपस्थिति में मुर्गी अण्डे देती रहती है, वो सजीव ही होते हैं, मुर्गी के शरीर से ही उत्पन्न होते हैं। उसमें भी जीवन अनिवार्य रूप से है और जीव के सारे लक्षण श्वासोचछवास, बुद्धि, खुराक लेना आदि पाये जाते हैं। जिसमें जीवन के लक्षण हों, वो ही जीव है। अफलन शील अंडा (चूजा अंडे में से बाहर न असके) मृत या अजीव नहीं कहा जा सकता है। स्त्री डिम्बोत्सर्ग (रजोधर्म) माह में एक बार करती है जिसका परिणाम गर्भ नहीं किंतु मुर्गी अण्डोत्सर्ग (रजोधर्म) 22 से 23 घंटे में करती है, अंडा देती है। चूजे और अण्डे हिंसा और क्रूरता से बनते हैं, इसमें धन की राक्षसी लिप्सा है। शाकाहारी अण्डा एक भ्रामक नाम एवं फरेब है। अण्डा सब्जी नहीं है। धार्मिक ग्रंथ अथर्ववेद में कहा गया है कि मैं उन दुष्टों को नष्ट कर देता हूं जो अण्डे और मांस खाते हैं। अण्डे के कवच (शैल) में शवासोच्छ्वास के लिए सूक्ष्म छिद्र होते हैं। सेये गये अंडे जन्म पूर्व चूजे हैं ओर बगैर सेये अंडे जो मुर्गी के यौन चक्र के उत्पाद हैं अत्यन्त अप्राकृतिक हैं, दोनों मांसाहार हैं।

अण्डा उत्पादन गृह (हैचरिया) अण्डा देने वाली मुर्गियां तैयार करते हैं। चूजों को तंग और तकलीफ देह पिंजरों में रखा जाता है वे सहज ही

हिंसक, हमलावार, कुंठित, कलही हो जाते हैं और एक दूसरे पर बर्बर आक्रमण करते हैं। रात को तेज प्रकाश में जब वो अन्धेरे में पड़े रहते हैं, उनकी चोंचे काट दी जाती है ताकि कम जगह में रह सकें और जागते रहें। जिससे पानी पीना भी हराम हो जाता है। ज्यादातर मुर्गियों को कैंसर, दमा ब्रोकाइटीज जैसे असाध्य रोग हो जाते हैं। 20 प्रतिशत मर जाती हैं। जिनकी खाद्य बनाकर रोएंदार पशुओं को खिलाई जाती है। नर चूजों को बेरहमी से प्लास्टिक की थैलियों में दम घोट कर मार डालते हैं। चूजे की आयु लगभग 12 वर्ष होती है किंतु ब्राइलरों को आठ हफ्तों में ही मार डालते हैं। अण्डा देने वाली मुर्गी को 12 से 24 महीनों में मौत के घाट उतार देते हैं। पौल्ट्री फार्मो में 5000 से अधिक दवाइयां और इतने ही केमिकल्स (रसायन) काम में लाते हैं। मुर्गियों को ताजी हवा धूप, स्वतंत्रता, प्रसन्नता नहीं मिलती, वे बुरी तरह त्रस्त, कुंठित हो जाती हैं। चूजे की टांगे काटने से उनमें तनाव, प्रतिहिंसा, लाचारी, झुंझलाहट हो जाती है। अंडा खाने वालों को दवाओं का जहरीला असर एवं मानसिक विकार एवं अनेक असाध्य रोग होना स्वाभाविक है क्योंकि अनेक रोगी मुर्गियां व कई दिन पुराने अंडे व बीमार चूजे भी खरीद कर खाते हैं, ये ज़हर ही ज़हर है।

<u>हानियां – बीमारियां</u> :- अगले अंक में ।

जैसा बोओगे वैसा पाओगे

गांव के सबसे वृद्ध और अनुभवी वैद्य रामसहाय सोन के पास हर बीमारी का इलाज मौजूद था, इसलिए उनके पास दूर गांव के लोग भी आया करते थे। एक दिन रानी नामक वृद्धा स्त्री लकड़ी के सहारे चलती हुई उनके पास आई और बोली, अरे रामसहाय जी, कोई दवा दे दो कमर में बहुत दर्द है। दस दिनों से तकलीफ में हूं। रामसहाय उसे जानते थे।

उन्होंने वृद्धा को बैठाकर पानी पिलाया और पूछा, बहनजी आप अकेले इतनी दूर आ गई, अपने बेटे या बहू को साथ क्यों नहीं लाई? यह सुनकर वृद्धा की आंख भर आई। रूंधे कंठ से वह बोली अरे किस बहू-बेटे की बात कर रहे हैं वैद्य जी? बहू सेवा करना तो दूर बच्चों के बहाने से हमेशा जली कटी सुनाती रहती है और बेटा सिर्फ बहू की सुनता है। उन दोनों को ही मुझसे मतलब नहीं।

मेरा दुख देखने वाला कोई नहीं है वैद्य जी। यह सुनकर वैद्य जी द्रवित हो गए। कुछ देर सोचने के बाद बोले, कि इसी तरह आपकी सास रुकमणी भी अपनी तकलीफ बयां करती थी। उसने भी तुम्हारे और तुम्हारे पति के बारे में कुछ ऐसी ही टिप्पणी की थी। मैं इस पुनरवृत्ति को देखकर हैरान हूं। आज मुझे नेचर के न्याय पर यकीन हो गया कि मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल लौटकर मिलता है। मैंने उस दिन तुम्हारी सास को दर्द की दवा दी थी और आज तुम्हें दूंगा। इतना कहकर वे दवा तैयार करने लगे।

सीख

किसी ने सच ही कहा है कि बेर का बीज लगाओगे तो आम कहां से मिलेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य जैसा व्यवहार करता है उसे वैसा ही व्यवहार लौटकर मिलता है।

छोटी छोटी अच्छाइयों का एक बड़ा संकल्प

जीवन में कई सेर अच्छाई इकट्ठे लौटाने का मौका कभी-कभार आता है, पर छटांक भर भलाई जुटाने व लौटाने के अवसर हमेशा होते हैं। यह हिसाब बराबर करने के लिए ही यह नया साल है।

पॉश इलाके की बेहद आलीशान इमारत। कुर्सियों पर बैठे प्रतीक्षारत मरीज। फीस लेने, पर्ची बनाने जैसे सारे काम एकदम व्यवस्थित। डॉक्टर का बड़ा सा कमरा और उसी अनुपात में उनकी टेबल, जिस पर रखे थे तमाम अत्याधुनिक गैजेट्स। सारा तामझाम देखकर लगा कि दूसरे व्यस्त लोगों की तरह यह भी जल्दी-जल्दी समस्या सुनेंगे, दवा लिखेंगे और चलता कर देंगे। पर उन्होंने ध्यान से सारी बातें सुनीं, हमारी तमाम जिज्ञासाओं का समाधान किया। सविस्तार यह भी बताया कि फिलहाल कोई समस्या नहीं है और न ही किसी उपचार की जरूरत है। जब हम जाने लगे, तो उन्होंने कहा, 'काउंटर से फीस वापस लेते जाइए।' लगा कि हमने कुछ गलत सुन लिया है। फिर अंदाजा लगाया कि उन्होंने दवा नहीं लिखी थी, शायद इसलिए पैसे वापस किए। लेकिन समय और परामर्श तो दिया ही था।

कभी पढ़ा था कि प्राचीन चीन में ऐसे चिकित्सक भी होते थे, जो रोग ठीक होने के बाद ही फीस लेते थे। उन्हें देखा, तो लगा ऐसे चिकित्सक आज भी होते हैं। यह बीत रहे साल का सबसे सकारात्मक-चौंकाऊ अनुभव रहा। एक ऐसे दौर में, जब चिकित्सा का पवित्र पेशा भी विश्वास खोता जा रहा है, भरपूर समय और सलाह देने के बाद पैसे लौटा देना अविश्वसनीय लगता है। लगा कि अच्छे लोग अभी भी मिलते हैं। फिर मन में बिजली'सी कौंधी-अच्छे लोग तो हर कहीं मिलते हैं। वे सारे वाकया याद आने लगे, जब किसी ने अपने पद, प्रतिष्ठा और पावर को परे रख, खुलकर तारीफ की थी। जब किसी अजनबी ने सही रास्ता बताया था। जब रास्ते की मुलाकात में कोई मुसकराया था और खिली मुस्कान देखकर लगा था कि उसका दिल भी खुला है। जब किसी ने साधारण-से मजाक पर दिल खोलकर ठहाके लगाए थे। जब बाइक चलाते किसी ने चिल्लाकर बताया था कि साइड स्टैंड उठा लो या हेडलाइट ऑफ कर लो...। एक आदमी की अच्छाई ने तमाम अच्छे आदमियों और उनकी अच्छाइयों की याद दिला दी। 'जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी' में प्रकाशित शोध अध्ययनों की श्रृंखला का निष्कर्ष था कि अच्छाई के किसी असाधारण कार्य की जानकारी भी अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करती है। सो, पहला अच्छा काम तो यह हुआ कि सारे भले लोगों के लिए मन कृतज्ञता से भर उठा। फिर हमेशा हिसाब किताब करने वाले मन को संतुष्टि मिली कि इस साल छटांक-छटांक करके कई सेर अच्छाई मिल गई। हिसाब से मन को बड़ी शांति मिली, पर उसी मन की ईमानदारी ने यह पूछ कर बेचैन कर दिया कि वाह बेटा! अच्छाई तो खूब जुटाई, पर बदले में तुमने कितनी लौटाई? तब याद आए, थाईलैंड के राजा भूमिबल अतुल्यतेज, जिनके राज्यरोहण को 61 वर्ष से ज्यादा हो गए हैं। उनका कहना है, 'एक अच्छा

व्यक्ति दूसरे को भी अच्छा बना सकता है। इसका मतलब है कि अच्छाई समाज की अच्छाई को सामने लाएगी और अन्य व्यक्ति भी भले होंगे।' स्वयं को सांत्वना दी कि यही हिसाब बराबर करने के लिए एक नया साल मिला है। जीवन में कई सेर अच्छाई इकट्ठे लौटाने का मौका तो कभी-कभार आता है, पर छटांक भर भलाई ज़ुटाने और लौटाने के अवसर तो हर दिन, हर जगह होते हैं। सही राह बताना, मुस्कराकर माफी मांग लेना, बुजुर्ग भिखारन को एक की जगह पांच रुपए का सिक्का दे देना, गरीब से बिना मोल-भाव किए सामान खरीद लेना, कुछ अच्छा लगे तो तारीफ कर देना.... क्या ये छोटी-छोटी अच्छाइयां नए साल के लिए हमारे संकल्प नहीं हो सकतीं?

(जीवन प्रसंग)

रिश्ते सुधारने के नुस्खे

* आपको अपने प्यार को खास महसूस कराना है तो उसके बारे में बारीकी से नोटिस करें। उसे अहसास दिलाएं कि छोटी-सी छोटी भिन्नता या बदलाव आपकी नज़रों से नहीं बच सकता। उसके चेहरे पर गम, उदासी या, खुशी की भावनाओं को महसूस कर उसके अनुसार जिज्ञासा करने से सामने वाले को साथी पर बेहद भरोसा होता है। वह खुद को खास महसूस करता है। वरना लोग अपनों के बीच भी अजनबी बनकर समय काट रहे होते हैं।

* अपने सब्र का दामन कभी न छोड़े, चाहे शिकायत की मुद्रा आपकी सोच से विपरीत क्यों न हो। अगर आपने उनकी शिकायत को धैर्य से नहीं सुना तो सामने वाले को यही लगेगा कि आपको उनकी परवाह नहीं है। हो सकता है उनकी शिकायत पूरी तरह वाजिब न हो पर यह दुख या सवाल उनके मन में आपके ही किसी व्यवहार से आया है। बेहतर यही है कि उस शिकायत को खुले दिल से सुन लें। ऐसी परिस्थितियों से बचने से या अपनी बात कहकर चुप कराने से रिश्तों का अपनापन जाता रहता है।

* अगर आप किसी रिश्ते को लेकर आश्वस्त हैं तो आपके साथी तक अपने आप ही उस आश्वस्ती की लहर पहुंच जाएगी। आपका भरोसा, अपनापन बिना शब्दों में ढाले ही दूसरे पर प्रतिबिंबित होगा। जहां मन की सच्चाई नहीं हो वहां कोई शब्द, कोई जादू-टोना काम नहीं करता। यदि एक व्यक्ति आश्वस्त नहीं है तो दूसरे से आश्वस्ती की उम्मीद करना बेकार है।

* अनजाने में कोई भूल हो गई है तो माफ करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि सचमुच उसका इरादा दुख पहुंचाने का नहीं था तो उस बात को दिल से लगाए रखने का कोई तुक नहीं है। माफ करते हुए रिश्ते को आगे बढ़ने का मौका दें। ऊपर लिखे नुस्खों को यदि आजमाएं तो यकीन मानिए कम से कम पचास प्रतिशत तो रिश्ते में सुधार आना निश्चित है। रिश्ते में गरमाहट और खुशी भी तभी मिलती है जब उसे सच्चे मन और सचेत रूप से निभाया जाता है।

(जीवन प्रसंग)

पंडित मदनमोहन मालवीय ने दिखाई नैतिक सामाजिकता

एक फटेहाल महिला घायल अवस्था में सड़क के किनारे पड़ी हुई कराह रही थी। पास में उसका अबोध शिशु लेटा था, जो भूख के मारे रो रहा था। महिला में इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह बच्चे को गोद में लेकर संभाल सके। अनेक लोग उस मार्ग से आ-जा रहे थे। वे क्षणभर को रुकते, महिला की स्थिति देखकर अपनी प्रतिक्रिया देते और चल देते। लगभग सभी की यही राय थी कि यह पता नहीं कौन है? यदि इसकी मदद करने गए तो पुलिस को जवाब देना पड़ेगा। अचानक वहां से एक बग्घी गुजरी। उस महिला की कराह सुनते ही बग्घी रुकी और एक व्यक्ति नीचे उतरा। उसने बिना कुछ कहे-सुने उस महिला और उसके शिशु को उठाया और बग्घी पर बैठा दिया। अपने कोचवान से वह बोला-बग्घी अस्पताल ले चलो। कोचवान ने कहा-लेकिन साहब, आपको तो जलसे में जाना है। सभी आपका इंतजार कर रहे होंगे। वह व्यक्ति बोला- मेरे लिए मानव सेवा जलसे से बड़ी है। कोचवान फिर कुछ नहीं बोला और बग्घी अस्पताल की ओर मोड़ दी। अस्पताल मे महिला को यथोचित उपचार दिया गया। जब महिला पूरी तरह चैतन्य हुई, तो उस व्यक्ति ने उसे कुछ रुपए दिए और वापस बग्घी पर आकर कोचवान से कहा-अब जलसे में चलो। ये महान व्यक्ति थे पंडित मदन मोहन मालवीय। सार यह है कि किसी असहाय की सहायता को अपने अन्य सभी कार्यो से अधिक वरीयता देनी चाहिए। यही वह नैतिक समाजिकता है, जो एक मानवीय समाज की रचना करती है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

शोक समाचार

बहुत ही शोक की बात है कि पिछले थोड़े ही समय में हमसे कितने धर्म सम्बन्धी अचानक एक एक करके बिछड़ गए। उनके चले जाने से हमारी पहले ही गिणती के लिहाज से बहुत छोटी और गरीब समाज को बेहद बड़ा घाटा पड़ गया, जिसकी भरपाई बहुत मुश्किल है। जो धर्म सम्बन्धी जुदाई दे गए उनके सम्बन्ध में हम बहुत थोड़ा और संक्षिप्त यहां वर्णन करते हैं।

1) **<u>बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान किशन सिंह जी छाबड़ा ऐडवोकेट</u>**

आप बहुत पुराने, योग्य, वरिष्ट धर्म सम्बन्धी थे। आप परलोक वासी माननिय श्रीमान नौध सिंह जी के पुत्रवत्त भतीजे थे और उनके लिए बहुत गहरी श्रद्धा रखते थे। आप अनूपगढ़ से सम्बन्धित थे। अनूपगढ़, रायसिंह नगर आदि स्थानों में आप चोटी के वकीलों में से थे। वह वकील होते हुए भी एक सेवाकारी वजूद थे। वह कोई पद, सम्मान, सत्ता आदि के बिल्कुल चाहवान नहीं थे। वह चाहते तो M.L.A., वजीर एंव देव समाज में भी कौंसलर वा उच्च पदधारी बन सकते थे। वह अनूपगढ़ में 60 - 70 एकड़ जमीन के बागों और कोठियों के मालिक रहे हैं। उनके कारण बीसियों जन और परिवार देव समाज से जुड़े, वह देव समाज के काम को दिलोजान से बढ़ता हुआ देखना चाहते थे, उनके अच्छे परिवार और सम्बन्धियों ने अपनी आखरी बिमारी में बेहद सेवा की, जो इस नारकिय संसार में बहुत कम दिखाई देती है। हम ऐसे कीमती धर्म सम्बन्धी के चले जाने पर गहरा शोक और सन्तप्त परिवार और बच्चों के लिए हमदर्दी वा स्नेह का प्रकाश करते हैं। परलोक उनकी हर प्रकार से रक्षा वा सहायता होगी हम भी उनके लिए ऐसी कामना करते हैं। पुष्पा जी और बच्चों को धैर्य मिले, ऐसी कामना करते हैं।

2) **<u>श्रीमान नरेन्द्र दत्त जी धीमान (खतौली)</u>**

आप बजुरग धर्म सम्बन्धी, खतौली (यू०पी०) से सम्बन्धित थे। पिछले महीनों वह अचानक दिल का दौरा पड़ने से परलोक सिधार गए। वह एक अच्छे सत्तर के कारीगर वा मैकेनिक थे। वह लगभग 60 वर्ष की वयस में पहली बार धर्म सम्बन्धियों की प्रेरणा से चण्डीगढ़ महोत्सव में शमिल हुए, उस महोत्सव पर शामिल होकर वह, जो सिगरेट, बीड़ी के बुरी तरह गुलाम थे, जिसके कारण बहुत दुखी भी थे, इस गुलामी से हमेशा के लिए मुक्त हो गए और थोड़े अर्से में सेवक बनने के बाद उन्हें देव समाज की खुशख़बरी सुनाने का जोश सवार हो गया। कुछ सालों के बाद उनकी धर्म पत्नी जी भी अच्छी सूझ बूझ वाली हैं, सेविका बन गई इसके ईलावा एक दर्जन के करीब जनों को वह संगत में लाते रहे, जिनमें से कई जन सेवक तक भी बन गए। एक एक डाक्टर तक को भी प्रेरित करके वह कई बार संगत में लाते रहे। सम्मान के योग्य श्रीमान राजेन्द्र जी (देहरादून) तो नारकिय जीवन से बचाने वाले वही मुख्य सहायक बने, जो उन्हें

कल्याण संगत में ले आए। प्राय: 18 - 20 वर्ष तक वह सेवक रहकर जिन्दा रहे। डबवाली (हरियाणा) में अकेले देव धर्म मिशन मन्दिर में कई बार कई कई महीने ठहिरकर, कई प्रकार की कठिनाईयां सहन करके वह सेवाकरी होते रहे। वह अपनी कमी और ग़ल्ती से अपने से योग्य धर्म सम्बन्धियों से खुशी खुशी सहमत हो जाते थे और सुधार का साधन भी पूरा करते थे। बहुत जनों तक उन्होंने "धर्म जीवन" वा देव समाज के सहित्य को पंहुचाने का काम किया। बहुत मेहनती थे। बुढ़ापे और टांग की खराबी को आड़े नहीं आने देते थे। ऐसे कीमती धर्म सम्बन्धी का चले जाना क्या समाज, क्या उनकी धर्म पत्नी और दोनों बेटों के लिए बहुत दुख प्रद है। हम उनके आत्मिक भले के लिए और आत्मिक शान्ति के लिए कामना करते हैं।

3) **<u>बीबी ज्ञान जी अम्बाला सिटी</u>**

बहुत दुख की बात है, कि सम्मान के योग्य अम्बाला निवासी उत्साही धर्म सम्बन्धी श्रीमान धर्मानन्द जी की बीबी ज्ञान जी सपुत्री थी, वह परलोक सिधार गई। श्रीमान धर्मानन्द जी बहुत श्रद्धावान और जोशीले सेवक थे। उनका सारा परिवार पुराना देव समाजी परिवार है। उनकी बहन कुमारी उमा जी वर्षो विकासार्थी रहीं और समाज सेवा के काम करती रहीं। बीबी ज्ञान जी भी उच्च शिक्षा प्राप्त महिला थी, वह भी निष्टा से देव समाज के साथ अपने बचपन से जुड़ी हुई थी। वह बहुत नेक, पवित्र और सेवाकारी महिला थी। ऐसे अच्छे परिवार की सदस्य और नेक महिला का चले जाना क्या परिवार के लिए, क्या देव समाज के लिए बहुत बड़े घाटे की बात है। वह सारी उमर अविवाहित रहीं और सत्संगों और समागमों पर हमेशा पहुंचती रहीं। अपने परिवारिक जनों को भी साथ लाती रहीं। उनका बिछड़ जाना बहुत दुखदाई है। हम उनके निधन पर उनके भाईयों अनिल जी आदि सब परिवारिक जनों के साथ गहरे शोक और हमदर्दी का प्रकाश करते हें, और उनकी आत्मा की परलोक में हर तरह से रक्षा, सहायता और शान्ति की कामना करते हैं।

बलदेव सिंह

पृष्ट 2 का बाकी

भगवान ने फरमाया कि यद्यपि प्रचार विभाग में कुछ ऐसे जन भी हैं कि जो समाज से कोई निर्वाहवृति नहीं लेते परन्तु वह सफर खर्च आदि के द्वारा कई बातों का बोझा समाज पर डालते हैं, भविष्य में उनका यह बोझाा भी समाज पर न रहेगा। अन्त में उन्होंने अपील की कि तुममें से जो लोग इस नियम के आधार पर प्रचार विभाग में काम करना चाहते हों, वह अपने आपको पेश करें और जो ऐसा नहीं कर सकते, वह बेशक इस काम को छोड़ दें। उनकी इस अपील पर कई जनों ने उपरोक्त नियम के आधार पर ही इस विभाग में काम करने के लिए अपने-अपने नाम लिखवाए।

शुभ संग्राम (गतांग से आगे)

3.11.2011, शाम 8.30 बजे इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि नीच सुख समाज की तीन सतरों पर हानि करते हैं।

पहला स्तर :- उसका स्वंय का जीवन, मान सम्मान का, निज की उमर का, निज सुखों का।

दूसरा स्तर :- उसका परिवारिक जन दुखों और हानियों का शिकार होते हैं।

तीसरे स्तर :- पर समाजिक जन दुख और हानि उठाते हैं। एक नशे का अनुरागी अपनी सेहत वा उमर का दुश्मन, बिमारियों का घर बन जाता है, बहुत दुख उठाता है। समाजिक जन ऐसे जनों से हानि उठाते हैं। सभापति जी ने पंडित नेत राम जी श्रीमान स० हरनाम सिंह जी निजी कथाएं सुनाई। यह भी बताया कि धर्म वही सच्चा होता है जो मनुष्यों की जाति जिन्दगी को सुधारे, उजड़े परिवारों को बसाए, जो धर्म परोपकारी पैदा करे। अनोख सिंह जी ने 40 साल की उमर में अफीम के जानलेवा ज़हर से निकलकर कितने परोपकार के काम किए। समाज के प्रभाव तीनों सतरों पर काम करते हैं, यह बहुत प्रभावशाली ढंग से बताया।

4.11.2011, 8.30 बजे सुबह :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि पटेल, पंडित नहरू और अन्य बड़े नेता गांधी जी के आगे झुकते थे, परन्तु बकरी यह नहीं देख सकती थी। किसी श्रद्धावान ने कहा है, -

"जितने महान जीवन है, मेरी तसबी के दाने हैं,
मैं उनको देख लेता हूं, इबादत हो ही जाती है"

उपकारियों का कर्ज़ा हम से छुपा ही रहता है, गुणों के प्रति हम अन्धेरे में हैं। एक किसान कहता है कि मेरा भैंसा बी०ए० पास है क्योंकि वह बी०ए० पास जितना कमाता है। एक बज़ुरग की विद्या के प्रति ऐसी दृष्टि है। किसी पढ़े लिखे के प्रति उनका यह दृष्टि कोण था। शुक्रगुज़ारी के भाव बगैर उपकारियों के उपकारों की दुनियां छुपी रहती है। सभापति जी ने बताया कि उन्होंने अपनी माता की श्रद्धा और शुक्रगुज़ारी से सेवा की, परन्तु फिर भी कभी कभी ऊंचा बोल जाते थे। कुछ अन्धापन दूर हुआ है। हमें दूसरों के दुख नज़र नहीं आते। दिल्ली के एक हस्पताल में एक बेटा कई मील अपने बाप को उठाकर ले गया, दिल्ली के लोग इतने कठोर हैं कि किसी ने मदद नही की। कबीर जी ने लिखा है:-

"यह तनविष की बेलरी"
मैं अपराधी जन्म का, नख सिख भरे विकार"

गुरू महाराज अन्धकार हर्ता हैं। आखिर में सभापति जी ने सब का धन्यवाद किया।

13.11.2011, श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान जगदीष जी 12 नवम्बर की सुबह मानसा पहुंचे। डाक्टर सुबोध कुमार जी के परिवार को मिले। वहां से तीन साथियों सहित केसूपुरा पहुंचे। रात को 8.30 बजे सभा की गई। श्रीमान जगदीष जी ने बहुत सुन्दर भजन का गान किया। सभा में बताया गया कि जैसे सेहित के कुछ नियम हैं, वैसे ही धर्म के भी नियम हैं। सबसे बड़ा नियम

है, उच्च जनों की संगत में बैठना। संगत में बैठकर जितनी योग्यता हो भला हो जाता है। पाप और मिथ्या दूर होती है, सम्बन्ध बेहतर होते हैं। सेहत, धन, सन्मान बढ़ता है। सभापति ने उच्च संगत से लाभ उठाने वालों की सुन्दर घटनाएं बताई। सबको सभाओं से लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

13 नवम्बर की सुबह सभा में "अद्वितीय है रुप तुम्हारा" भजन गाया गया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परम पू० भगवान का रूप अद्वितीय क्यों है, इस विषय में बताया। धर्मो में बताया जाता है मनुष्यों को परमात्मा दुखी सुखी करता है, उसका नाम जपने से दुख दूर होते हैं। पू० भगवान ने देखा हम सुखों के प्रेमी होकर पाप करते हैं और दुखी हो कर मरते हैं। पू० भगवान हमारा पापी रूप दिखाकर अपनी शक्ति से उससे निकालते हैं। जितना पाप करते हैं, उतने ही दुखी होते हैं। गुरु महाराज अपने प्रभावों से पाप सागर में गोते लगाते हुओं को बचाते हैं। जितने उच्च भाव बढ़ते हैं, नीच जीवन घटता है, ऐसी घटनाएं पेश की। फिर "करो कृपा मेरे सत्गुरु, बचालो नीच जीवन से" भजन का गान किया गया एक घण्टा एक दम्पति से बातचीत की।

रात को 7.30 बजे सभा हुई, जिसमें 60. 65 लोग शामिल थे। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य चांद पर बसने के सपने देखता है, परन्तु उसे धरती पर रहना नहीं आया "नीच जीवन धारी जब परिवार बनाते हैं, तो अपनी अपनी गतियों से महा नर्क उपजाते हैं" सेवक बनकर भी हम जब दूसरों से टकराते हैं, तो नीच बनते हैं। अन्मेल की घटनाएं पेश की। फिर बताया कि गुरु महाराज इसी पृथ्वी पर स्वर्ग लाते हैं। पू० भगवान श्रद्धा, कृतज्ञता उपजाते हैं। गुण वा उपकार दिखाते हैं। इस प्रकार की उच्च स्वर्गिय दृष्यों की घटनाएं पेश की। बहुत अच्छा वातावरण बना।

14 नवम्बर, सुबह 8.30 बजे की सभा में "धर्म पाए बिना जीना, जन्म अपना यह है खोना" नामक भजन गाया गया। सभा में बताया गया कि केवल धन प्राप्ति में उमर गंवाना, हानि उठाना है। धर्म उच्च भावों से आता है। शुक्रगुज़ारी धर्म का भाव है, इसके बिना घर घर नर्क है। शुक्रगुज़ारी की घटनाएं बताई गई। सभापति जी ने अपना नशुकरापन पेश किया। गुरू महाराज कैसे शुक्रगुज़ार पैदा करते हैं, ऐसे ब्यान से सभापति जी जारोकतार रो रहे थे। बार बार गुरू महाराज की छवि के आगे झुक रहे थे। हाजरीन भी भाव विभोर हो रहे थे। दो सुन्दर भजनों का गान किया गया। प्रभावित होकर एक प्रिंसीपल ने अपने स्कूल में सभा रखने के लिए प्रार्थना की।

दुपहिर को स्कूल में एक सभा रखी गई जिसमें सैंकण्डरी स्कूल के प्रिंसीपल साहिब, स्टाफ और सैंकड़ों बच्चों ने शामिल होकर लाभ उठाया। बच्चों को बताया गया कि महान इन्सान बनना चाहते हो तो अपने भीतर कुछ गुण पैदा करने होंगे बड़ों का सम्मान एक गुण है, जो बड़ों का सम्मान नहीं कर सकता, वह महान नहीं बन सकता। इसकी उदाहरणें दी। स्टाफ और बच्चे बहुत प्रभावित हुए।

Published on 5th of the month
20
फरवरी – 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

रात के समय सभा हुई। इसमें 60 – 65 जन शमिल हुए। श्रीमान जी ने बताया कि धर्मो में पाठ नमाज़, जाप आदि पर ज़ोर है। परन्तु मनुष्य नीच से नीच बनता जा रहा है। पाप बढ़ रहा है। एक घर जिसमें पवित्र ग्रन्थ का प्रकाश होता था। मामूली बात से झगड़ा हुआ, क्लेश बढ़ गया, घर का मालिक रेल की लाईन पर जाकर लेट गया, बड़ी मुश्किल से वापिस लाए। फिर भी बहुत दिन घर नहीं गया। गुरू महाराज ने मनुष्य प्रकृति का सही अध्ययन किया है। उन्होंने बताया है कि मनुष्य के शत्रु उसके अन्दर हैं, नीच अनुरागों की शक्ल में, जो कोई धर्म न ही दिखाता है और न ही बचाता है। पू० भगवान का असल कारज मनुष्यों को सुधारने का है, सभापति जी ने बताया कि मुझे बहुत सुधारा है। फिर जगदीष जी ने अपने सुधार को जारोकतार आंसू बहाते हुए बताया, वह भाव विभोर थे। गुरू महाराज के प्रभावों का साक्षात चमत्कार उनका जीवन है। यह पाप का किला फतह किया है। फिर उनके पिता जी वा फूफा जी के परिवर्तन बताए। सभा गुरू महाराज की महिमा को दर्शाने वाली थी।

15.11.2011, सुबह की सभा, यहां आखरी सभा थी। फिर Sr. Sec. School के प्रिंसीपल और सीनियर कलासों के 15 – 18 बच्चे भी शामिल हुए। दुनियां के धर्म गुरू, पीरों की अराधना को ही धर्म मानते हैं, परन्तु उनकी कोई स्तुति कारगर नहीं होती। परन्तु मानवता दुखों का शिकार हो रही है। उनमें नीच सुख अनुराग कारण हैं, जो दिखाई नहीं देते, निवारण तो क्या होना था। विकास के क्रम में देवात्मा का आर्विभाव, वह अद्वितीय रोशनी लेकर आया है, जिससे मनुष्य को अपनी नीचता, ग़ल्ती वा कमी दिखाई देती है। उसके भीतर दुख पैदा हो जाता और अगर योग्यता हो तो उससे मुक्त हो जाता है। हम दूसरों को दोष देते रहते हैं। सभापति जी ने अपने जीवन की ठोस कमियां अपने सम्बन्धों में बताई। और सुन्दर घटनाएं बताई। बहुत प्रभावदायक मण्डल बना, उत्साह और जोश प्राप्त किया, महोत्सव पर पहुंचने की अवश्यकता अनुभव की। 1500 रू० दान प्राप्त हुआ और जय ध्वनि से सभा समाप्त हुई।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts